दिनांक :- 15-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- 12th (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- चतुर्थ

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- सिंधु घाटी की सभ्यता —

सिंधु-सभ्यता के कुछ प्रमुख स्थल —

बलूचिस्तान :- यहाँ व्यापार मार्गों के साथ-साथ स्थल पाये जाते हैं। इसमें तीन स्थल महत्वपूर्ण माने जाते हैं। सुतकांगेडोर (दशक नदी के मुहाने पर) सोत्काकोह (शादी कौर के मुहाने पर) और बालाकोट विंदार नदी के मुहाने पर) ये तटीय स्थल फारस की खाड़ी जैसे इलाकों के समुद्री मार्ग पर बने बन्दगाह माने जाते हैं। कुछ स्थल बलूचिस्तान

की भूमि पर भी पाये जाते है जैसे उत्तरी बलूचिस्तान में डाबरकोट। किरथार पर्वत के पार दर्रो के मुहानो पर भी कुछ स्थल है। इस तरह का एक महत्वपूर्ण स्थल मूला दर्रे के मुहाने पर पठारी दंब है।

उत्तरी पश्चिमी सीमान्त – यहाँ सारी सामग्री गोमल घाटी में केन्द्रित है। गुमला जैसे स्थल पर सिंधु-सभ्यता के अवशेष पाये जाते है।

सिंधु – सिंधु नदी के बाढ़ वाले मैदान के ऊपर अनेक स्थल मिलते है जैसे मोहनजोदड़ो चान्हूदड़ो, जोदेर जोदड़ो आमरी इत्यादि। मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यहाँ से विशाल स्नानागार (Great Bath) के अवशेष मिले है। चान्हूदड़ो से पकायी गयी ईटो के भवन और मनके बनाने का कारखाना प्रकाश में आया है।

पश्चिमी पंजाब – इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण स्थल हड़प्पा

Scanned with CamScanner

है जो रावी नदी के किनारे है। सर्वप्रथम हड़प्पा के उत्खनन में ही सिंधु सभ्यता के अवशेष मिले थे। यहाँ अन्नागार पाये गये है।

बहावलपुर – यहाँ के स्थल सूखी हुई सरस्वती नदी के मार्ग पर है। इस क्षेत्र में सिंधु सभ्यता के अनेक स्थल पाये गये है।

राजस्थान – यहाँ के स्थल प्राचीन सरस्वती नदी के सूखे हुए मार्ग के साथ-साथ फैले हैं। इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण स्थल कालीबंगा है जो गंगानगर जिले में स्थित है। यहाँ से लकड़ी की नालियों के अवशेष मिले है।

हरियाणा – आधुनिक हरियाणा में सिंधु सभ्यता के अनेक स्थलों का पता चला है। इन स्थलों में बनमाली अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्थल हिसार जिले में स्थित है।

पूर्वी पंजाब – इस क्षेत्र में अनेक स्थल मिले है जो नदी घाटियों के साथ-साथ फैले तथा शिमला की तराई तक चले गये है। रोपड़ और संघोल महत्वपूर्ण स्थल है।

चंडीगढ़ नगर में भी हड़प्पा संस्कृति के निक्षेप पाये गये हैं

गंगा-यमुना दोआब - यहाँ के स्थल आलमगीरपुर जिला मेरठ तक फैले हुए हैं। हुलास (जिला सहारनपुर) भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। दोआब के ऊपरी हिस्से में भी अनेक स्थल हैं।

जम्मू : इस क्षेत्र में माँदा प्रमुख स्थल है।

गुजरात - कच्छ और काठियावाड़ प्रायद्वीप में एवं गुजरात की मुख्य भूमि पर सिंधु-सभ्यता के अनेक स्थल मिले हैं। सुरकोतदा (कच्छ), लोथल (काठियावाड़) और भगतराव प्रमुख स्थल हैं। भगतराव किम सागर-संगम पर है।

उत्तरी अफगानिस्तान - यों तो उत्तरी अफगानिस्तान सिंधु सभ्यता के विवरण क्षेत्र में नहीं आता लेकिन शोर्तुगाई नामक स्थान पर सिंधु सभ्यता के अवशेष मिले हैं। विद्वानों का अनुमान है कि उत्तरी अफगानिस्तान में कुछ सिंधु सभ्यता बस्तियाँ रही हो क्योंकि उत्तरी अफगानिस्तान से लाजवर्द

मणि और मध्य एशिया से टिन का आयात होता था।
संक्षेप में सिंधु सभ्यता पश्चिम में मकरान तट-प्रदेश पर
सुतकांगेडोर से पूरब से आलमगीरपुर (जिला मेरठ उत्तर
प्रदेश) तक और उत्तर में जम्मू से माँदा से लेकिर दक्षिण
में किम सागर-संगम पर भगतराव तक फैली हुई थी।
इस प्रकार क्षेत्र की दृष्टि से सिंधु-सभ्यता समकालीन
सभ्यताओं में सबसे अधिक विस्तृत थी।
समय का निर्धारण - सिंधु-सभ्यता के काल निर्धारण
के सम्बंध में विद्वानों में काफी मतभेद है। सर जॉनमार्शल
ने इस सभ्यता का काल 3250 ई० पू० से 2750 ई० पू०
तक माना है। कुछ अन्य लोगों का विचार है कि यह सभ्यता
2500 ई० पू० से 1500 ई० पू० तक फूली-फली। गार्डन
चाइल्ड के अनुसार ई० पू० 3,000 के आसपास यह सभ्यता
विकसित हुई होगी। सर मोर्टिमर व्हीलर ने इस सभ्यता

का सम्भावित समय 2500-1500 ई० पू० बतलाया है सी० एल० फावरी का विचार है कि 2800-2500 ई० पू० के मध्य यह सभ्यता विकसित हुई होगी। कुछ इतिहासकार सिंधु सभ्यता को मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं का सम कालीन मानते है। आधुनिक काल में सिंधु सभ्यता का काल रेडियो कार्बन विधि (c-14) से निर्धारित किया गया है। इसके अनुसार इस सभ्यता का काल 2300 ई० पू० से 1750 ई० पू० माना जाता है। 1750 ई० पू० के आसपास तक सिंधु सभ्यता के दो प्रमुख नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नष्ट हो चुके थे। लेकिन दूसरे स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति का ह्रास धीरे-धीरे हुआ, और ह्रासोन्मुख स्थिति में गुजरात, राजस्तान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक अपने सीमांतों में यह सभ्यता लम्बे समय तक जीवित रही।

सिंधु सभ्यता के निर्माता कौन ?

सिंधु सभ्यता को जो रूप हमारे सामने आया है वह एक विकसित संस्कृति का रूप है। इसके प्रारंभिक चरण एवं क्रमिक विकास के बारे में निश्चित जानकारी नहीं है। यह विवादग्रस्त प्रश्न है कि सिंधु-सभ्यता के निर्माता कौन थे। कुछ विद्वान हड़प्पा-संस्कृति का प्रेरक औपनिवेशक शासन को जिसे सुमेर के निवासी ही सिंधु-क्षेत्र में लाये थे। मेसोपोटामिया से सिंधु सभ्यता के अनुप्राणित होने के पक्ष में व्हीलर का तर्क है कि मोहनजोदड़ो में राजकीय अन्नागार और गढ़ी तथा दक्षिण पूर्व बुर्ज के निर्माण में लकड़ी के शहतीरों का प्रयोग हुआ है। व्हीलर का मत है कि इनके निर्माता कच्ची ईंटों के भवनों निर्माण में लकड़ी अभ्यस्त थे। चूंकि इस तरह की निर्माण-प्रक्रिया मेसोपोटामिया में अधिक लोकप्रिय थी इस लिए हड़प्पा संस्कृति के गांवों में हुआ था।